

भगवान महावीर स्वामी



भगवान महावीर स्वामी, जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। उनका जन्म **599 (B.C.)** वर्ष पूर्व बिहार में 'क्षत्रिय कुंडग्राम' में मार्च के महीने (चैत्र शुदी त्रयोदशी) को हुआ। उनके माता-पिता का नाम रानी त्रिशला व राजा सिद्धार्थ था। उनके जन्म के बाद राजा सिद्धार्थ के राज्य में धन-धान्य (Wealth) की वृद्धि (Increment) होने से माता-पिता ने वर्धमान नाम रख दिया। आगे चलकर उनका नाम महावीर व ज्ञात पुत्र भी पड़ा। महावीर बचपन से ही बड़े निर्भीक (Brave) थे। एक बार बच्चों के साथ खेलते हुए बीच में साँप (Snake) आ गया तो उन्होंने उसे हाथ से उठाकर एक तरफ फेंक दिया।

उन्हें जन्म से ही **तीन ज्ञान (मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, व अवधि ज्ञान)** थे।

महावीर आरम्भ से ही वैरागी थे, परन्तु माता-पिता की इच्छानुसार उन्होंने क्षत्रिय कन्या 'यशोदा' से शादी करवा ली और उन्हें एक पुत्री पैदा हुई जिसका नाम प्रियदर्शना रखा गया। **28 वर्ष की आयु** में महावीर के माता-पिता का देहान्त हो गया और **30 वर्ष की आयु** में बड़े भाई नन्दी वर्धन की आज्ञा से दीक्षा ग्रहण कर ली।

श्रमण महावीर को साधना काल में अनेक कष्ट आए। जैसे एक बार एक ग्वाले ने उन्हें रस्सियों से मारा। एक बार चंड कौशिक सर्प ने उन्हें डंक मारा। संगम देने ने अनेक कष्ट दिए आदि-2।



श्रमण महावीर ने **12½ वर्ष** की साधना करने के पश्चात **केवल ज्ञान (Complete Knowledge)** को प्राप्त कर लिया और इस प्रकार से अपने 4 घाती कर्मों को खपाकर अरिहंत भगवान बन गए।

क्योंकि 'अरिहंत बनने के बाद उन्होंने लोगों को उपदेश देकर साधुव्रतों व श्रावक व्रतों के नियम करवाकर तीर्थ की स्थापना की अतः वे तीर्थंकर भी कहलाए।

भ. महावीर के साधना काल के कुल **4515 दिनों में 4166 दिन** उनकी तपस्या के हैं। उनकी तपस्या हमेशा निर्जल होती थी। पूरे साधना काल में सिर्फ 2 घड़ी (48 Minutes) उन्होंने नींद ली। शेष समय प्रायः मौन और ध्यान में रहते थे।

भ. महावीर स्वामी **72 वर्ष** की आयु में पावापुरी में अमावस्या के दिन निवारण (Liberation) को प्राप्त हो गए।



जैन ध्वज



जैसा कि आप जानते हैं कि सभी देशों का अपना-अपना ध्वज (Flag) होता है उसी प्रकार हर धर्म का अपना-2 Flag है। जैन धर्म के Flag को सन् 1974 में दिल्ली में भ. महावीर के 2500वें निर्वाण वर्ष पर निश्चित स्वरूप में स्वीकार किया गया। इसमें नवकार मंत्र के 5 पदों के आधार पर 5 रंग हैं और इनकी अपनी-2 Significance है।

	रंग	पद	प्रतीक (Significance)
1.	लाल	सिद्धों के लिए	कार्य की सम्पूर्णता का
2.	पीला	आचार्यों के लिए	धर्मसंघ की समृद्धि का
3.	सफेद	अरिहंतों के लिए	चारित्र की उज्ज्वलता का
4.	हरा	उपाध्यायों के लिए	ज्ञान की सम्पन्नता का
5.	काला या नीला	साधुओं के लिए	संसार से निर्लेपता का

जैन प्रतीक



किसी विशेष प्रकार के चिन्ह या पहचान की निशानी को प्रतीक कहते हैं। जैसे आपने देखा होगा कि बहुत सारी कम्पनियों के, स्कूलों के, कालिज के अपने-2 चिन्ह Logos होते हैं। आप की Shirts पर आपके School का Logo होता है, उसी प्रकार जैन धर्म का भी अपना एक Fixed Logo है। जिसे सन् 1974 में दिल्ली में Final किया गया था।

जैन धर्म के Logo की जो Shape है, वह वास्तव में जैन दर्शन की मान्यता के अनुसार संसार का नक्शा (Map) है। इसकी Height 14 रज्जू और चौड़ाई 7 रज्जू है [रज्जू मापने की एक इकाई है, It is a Measurement Unit as per Jainism].

इसे तीन भागों में बाँटा गया है। It has been divided in Three Parts which are called: अधोलोक (Lower Part of Universe), मध्यलोक (Middle Part of Universe) और उर्ध्वलोक (Upper Part of Universe):

1. Upper Part में देवता रहते हैं
2. Middle Part में हम मनुष्य व तिर्यच (पशु, पक्षी) आदि रहते हैं
3. Lower Part में नरक के जीव रहते हैं।



जैन बालक के कर्तव्य



1. **नमस्कार करना:** प्रतिदिन सुबह-2 उठकर माता-पिता को नमस्कार करना (जय जिनेन्द्र करना), इस दुनिया में हमारे उपर सबसे बड़ा उपकार हमारे माता-पिता का है, उन्होंने दुःख पाकर भी हमारा लालन-पालन किया है और हमें खुश रखा है।
2. **सेवा भाव:** माता-पिता को कभी भी नहीं भूलें, न ही उनके सामने उल्टे बोलें और बिमारी में उनकी मन लगाकर सेवा करो, क्योंकि माता-पिता व बड़ों की सेवा करना बहुत बड़ी धर्म क्रिया है।
3. **इन्द्रियों का संयम:** अपनी जीभ व आखों पर Control रखना जैसे:—
 - (a) भोजन सीमित मात्रा में खाना, शाकाहारी भोजन का ही सेवन करना और जीभ के लोलुप नहीं बनना।
 - (b) अपनी वाणी से किसी को भी कड़वा (Soar) नहीं बोलना, इससे सामने वाले को दुःख होता है।
 - (c) अपनी आखों से बुरी चीजें नहीं पढ़नी चाहिए और न ही देखनी चाहिये, जैसे अश्लील पुस्तकें, अश्लील Films आदि।
 - (d) हमें अपने से विपरीत (Opposite Sex) को बुरी नज़रों से नहीं देखना चाहिये और Bad Touch से बचना चाहिए।
4. सिगरेट, गुटका, शराब, आदि का सेवन नहीं करना।
5. दूसरों की सहायता करना।
6. हर रोज नवकार मंत्र, सामायिक आदि करने का प्रयास करना।

7. School College आदि में कहीं भी नकल नहीं करना ।
8. कभी भी चोरी नहीं करनी, झूठ नहीं बोलना ।
9. अण्डे से बनी केक पेस्ट्री, आइस्क्रीम इत्यादि कुछ भी वस्तु नहीं खानी ।
10. पशु, कुत्ते, बिल्ली, पक्षी आदि को बिना कारण पत्थर व डण्डा आदि नहीं मारना ।
11. मधुमक्खी आदि के छत्ते में आग नहीं लगाना ।
12. भोजन व पानी झूठा नहीं छोड़ना ।
13. मुंह से गाली नहीं देना ।
14. गुरुओं के सम्मुख बैठकर मुंह पर रुमाल या मुख वस्त्रिका लगाकर बोलना ।
15. Junk food जैसे बर्गर, नूडल, पिज्जा, चाउमीन, चिप्स, कुरकुरे आदि खाने से बचना । ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं ।
16. अपने-अपने धर्म स्थान जैसे स्थानक या मन्दिर आदि में हर रोज एक बार जरूर जाना ।
17. घर से बाहर जाते समय हमेशा अपने माता-पिता को बताकर जाना और कहां जा रहे हो, यह भी बताना ।
18. अच्छे दोस्त बनाना और बुरे दोस्तों से दूर रहना ।
19. घर के बाहर या सड़क आदि पर कूड़ा-कचरा नहीं फेंकना ।
20. होली, दिवाली आदि पर पटाखे नहीं छोड़ना (इससे वायु प्रदुषण फैलता है) ।
21. अधिक से अधिक पढ़ने की आदत बनाना ।
22. साधु-साध्वी को आहार बहराने की भावना रखना ।

